4 चाँद से थोड़ी-सी गप्पें (शमशेर बहादुर सिंह)

कवि परिचय

शमशेर बहादुर सिंह का जन्म उत्तरांचल के देहरादून में सन् 1911 में हुआ। इनकी शिक्षा देहरादून एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हुई। तत्पश्चात् इन्होंने प्रसिद्ध चित्रकार वकील बंधुओं से कला का प्रशिक्षण लिया। वे स्वातंत्रयोत्तर हिंदी कविता के प्रमुख कवि थे। इसके अलावा इनकी गद्य रचनाएँ भी असाधारण हैं। सन् 1993 में इनका निधन हो गया। शमशेर बहादुर सिंह की प्रमुख कृतियाँ हैं— कुछ कविताएँ, कुछ और कविताएँ, चुका भी नहीं हूँ मैं, इतने पास अपने, काल तुझसे होड़ है मेरी (काव्य संग्रह); कुछ गद्य रचनाएँ, कुछ और गद्य रचनाएँ (गद्य संग्रह)।

कविता का सार

'चाँद से थोड़ी-सी गप्पें' कविता में एक दस-ग्यारह साल की छोटी-सी लड़की की कल्पना और गप्पें हैं। आकाश में चाँद कुछ तिरछा, कुछ टेढ़ा नज़र आता है। उसका कहना है कि गोल होते हुए भी आप तो तिरछे ही नजर आते हैं। आपको देखकर ऐसा लगता है कि जैसे तारों से जड़ित आकाश पहन रखा हो। आकाश के तारे आपकी पोशाक जैसे ही नज़र आते हैं। गोल-गोल गोरा-सा मुँह ही नज़र आता है। आकाश में चलते हुए चाँद अपनी पोशाक को फैलाए हुए तिरछा-सा नज़र आता है। वाह रे चाँद, आपने हमें मूर्ख समझा है क्या? गप्पें लगाते हुए लड़की कहती है हम मूर्ख या बुद्धू नहीं। हम अच्छी तरह से जानते हैं कि यह घटने-बढ़ने की बीमारी है। जब घटते हो तो घटते ही चले जाते हो और बढ़ते हो तो बढ़ते ही चले जाते हो। तब तक दम नहीं लेते जब तक कि पूरे गोल न हो जाओ। वैसे यह बीमारी अच्छी नहीं होने वाली है।

सप्रसंग व्याख्या तथा अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर

1. गोल है ख़ूब मगर
आप तिरछे नज़र आते हैं ज़रा।
आप पहने हुए हैं कुल आकाश
तारों-जड़ा;
सिर्फ़ मुँह खोले हुए हैं अपना
गोरा-चिट्टा
गोल-मटोल,

शब्दार्थ : **गोल** = वृत्ताकार (round)। **ख़ूब** = ज्यादा (more)। **तिरछे** = टेढ़ा (oblique)। **ज़रा** = थोड़े से (little)। **कुल** = सारा (whole)। **आकाश** = आसमान (sky)। **गोरा-चिट्टा** = गोरे रंग वाला (fair)।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'वसंत भाग-1' में संकलित कविता 'चाँद से थोड़ी-सी गप्पें' से ली गई है। इसके कवि शमशेर बहादुर सिंह हैं। इसमें एक छोटी-सी लड़की की, चाँद को देखकर की गई कल्पना के बारे में बताया गया है।

व्याख्या : इन पंक्तियों में कवि कहता है कि छोटी-सी लड़की चाँद को देखकर कल्पना करती है। वह कहती है कि आप गोल हो मगर दिखने में तिरछे से नज़र आते हो। आसमान में चमकते हुए तारों को देखकर वह कल्पना करती है कि यह चाँद की पोशाक है, जो तारों से जड़ी हुई है। रात को चमकता चाँद, मुँह खोले हुए गोरे रंग का और गोल-मटोल सा दिखाई पड़ता है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर—

(क) कवि और कविता का नाम लिखिए।

उत्तर— कवि — शमशेर बहादुर सिंह
कविता — 'चाँद से थोड़ी-सी गप्पें'।

(ख) चाँद क्या पहने नज़र आता है?

उत्तर— चाँद तारों से जड़े हुए आकाश की पोशाक पहने हुए नज़र आता है।

(ग) चाँद को चमकता देखकर कवि के अनुसार लड़की ने क्या कल्पना की?

उत्तर— चाँद को चमकता देखकर लड़की ने यह कल्पना की है कि जैसे चाँद ने पूरे आकाश की पोशाक पहन कर गोरा-चिट्टा मुँह निकाल रखा हो।

(घ) लड़की को चाँद का मुँह कैसा लगता है?

उत्तर— लड़की को चाँद तिरछा नजर आता है।

2. अपनी पोशाक को फैलाए हुए चारों सिम्त।
आप कुछ तिरछे नज़र आते हैं जाने कैसे
—ख़ूब हैं गोकि!
वाह जी, वाह!
हमको बुद्धू ही निरा समझा है!
हम समझते ही नहीं जैसे कि
आपको बीमारी है :

शब्दार्थ : पोशाक = पहनने के वस्त्र (dress, attire)। **सिम्त** = दिशा (direction)। **गोकि** = हालाँकि, यद्यपि (though)। **बुद्धू ही निरा** = एकदम मूर्ख (dumb, fool)।

प्रसंग : पूर्ववत्।

व्याख्या : कवि के अनुसार लड़की चाँद को देखकर कल्पना करती है कि आसमान की पोशाक पहने वह उसे चारों ओर फैलाए हुए है। वह कहती है—पता नहीं क्यूँ आप तिरछे-से ही नज़र आते हैं। वाह जी वाह, आप भी खूब हो। आपने हमें बिलकुल मूर्ख ही समझा है। हम अच्छी प्रकार जानते हैं, आपको कोई बीमारी है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर—

(क) आसमान में चाँद कैसा नज़र आता है?

उत्तर— आसमान में चाँद तिरछा नज़र आता है।

(ख) कविता में चाँद औरों को क्या समझता है?

उत्तर— चाँद औरों को बिलकुल मूर्ख समझता है।

(ग) लड़की ने चाँद पर क्या कटाक्ष किया है?

उत्तर— लड़की ने चाँद पर यह कटाक्ष किया है कि क्या आप हमें निरा बुद्धू समझते हैं। क्या हम नहीं जानते कि आप को बीमारी है।

3. आप घटते हैं तो घटते ही चले जाते हैं,
और बढ़ते हैं तो बस यानी कि
बढ़ते ही चले जाते हैं—
दम नहीं लेते हैं जब तक बि ल कु ल ही
गोल न हो जाएँ,
बिलकुल गोल।
यह मरज़ आपका अच्छा ही नहीं होने में...
आता है।

शब्दार्थ : दम = चैन (relax)। **मरज़** = बीमारी (illness)।

प्रसंग : इसमें चाँद के बढ़ने व घटने की क्रिया को बताया गया है।

व्याख्या : कवि का कहना है वह छोटी-सी लड़की चाँद के बढ़ने और घटने को देखकर कहती है कि यह तो एक बीमारी है। जब आप बढ़ते हैं तो बढ़ते ही चले जाते हैं जब तक कि पूरे गोल नहीं हो जाते और घटते हैं तो घटते ही चले जाते हैं। यह मर्ज अच्छा नहीं है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर—

(क) कविता के अनुसार चाँद को कौन-सी बीमारी है?

उत्तर— कविता के अनुसार चाँद को घटने व बढ़ने की बीमारी बताई गई है।

(ख) चाँद की क्या विशेषता है?

उत्तर— चाँद सदा एक सा नहीं रहता है। वह घटता-बढ़ता रहता है।

(ग) चाँद कब तक बढ़ता जाता है?

उत्तर— चाँद तब तक बढ़ता रहता है जब तक कि पूरा गोल न हो जाए।

प्रश्न-अभ्यास

कविता से—

प्रश्न 1. 'आप पहने हुए हैं कुल आकाश' के माध्यम से लड़की कहना चाहती है कि—
(क) चाँद तारों से जड़ी हुई चादर ओढ़कर बैठा है।
(ख) चाँद की पोशाक चारों दिशाओं में फैली हुई है।
तुम किसे सही मानते हो?

उत्तर— (ख) चाँद की पोशाक चारों दिशाओं में फैली हुई है।

प्रश्न 2. कवि ने चाँद से गप्पें किस दिन लगाई होंगी? इस कविता में आई बातों की मदद से अनुमान लगाओ और इसके कारण भी बताओ।

उत्तर— पूर्णिमा : कविता में चाँद को गोरा-चिट्टा गोल-मटोल कहा गया है। पूर्णिमा के दिन चाँद पूरा गोल नजर आता है।

अष्टमी से पूर्णिमा के बीच : चाँद बढ़ता है और जब तक पूरा न हो जाए, बढ़ता ही चला जाता है, और कुछ तिरछा नज़र आता है।

प्रथमा से अष्टमी के बीच : प्रथमा से चाँद का घटना शुरू हो जाता है और घटता ही चला जाता है।

प्रश्न 3. नयी कविता में तुक या छंद की बजाय बिंब का प्रयोग अधिक होता है, बिंब वह तस्वीर होती है जो शब्दों को पढ़ते समय हमारे मन में उभरती है। कई बार कुछ कवि शब्दों की ध्वनि की मदद से ऐसी तस्वीर बनाते हैं और कुछ कवि अक्षरों या शब्दों को इस तरह छापने पर बल देते हैं कि उनसे कई चित्र हमारे मन में बनें। इस कविता के अंतिम हिस्से में चाँद को एकदम गोल बताने के लिए कवि ने ''बिलकुल'' शब्द के अक्षरों को अलग-अलग करके लिखा है। तुम इस कविता के और किन शब्दों को चित्र की आकृति देना चाहोगे? ऐसे शब्दों को अपने ढंग से लिखकर दिखाओ।

उत्तर— बु द्धू पोशाक।

अनुमान और कल्पना—

प्रश्न 1. कुछ लोग बड़ी जल्दी चिढ़ जाते हैं, यदि चाँद का स्वभाव भी आसानी से चिढ़ जाने का हो तो वह किन बातों से सबसे ज्यादा चिढ़ेगा? चिढ़कर उन बातों का क्या जवाब देगा? अपनी कल्पना से चाँद की ओर से दिए गए जवाब लिखो।

उत्तर— इस बात को लेकर सबसे अधिक चिढ़ता कि उसे घटने-बढ़ने की बीमारी है। यह एक ऐसी बीमारी है, जो कभी ठीक ही नहीं होती जब घटता है तो घटता चला जाता है और बढ़ता है तो बढ़ता ही चला जाता है।

चाँद का जवाब : मुझे कोई बीमारी नहीं है मैं तो अपनी मर्जी से ही घटता या बढ़ता हूँ। मैं इस ब्रह्मांड का हिस्सा हूँ। बढ़ना-घटना तो मेरी सुंदरता है।

प्रश्न 2. यदि कोई सूरज से गप्पें लगाए तो वह क्या लिखेगा? अपनी कल्पना से गद्य या पद्य में लिखो। इसी तरह की कुछ और गप्पें निम्नलिखित से किसी एक या दो से करके लिखो—

पेड़, बिजली का खंभा, सड़क, पेट्रोल पंप।

उत्तर— सूरज : सूरज दादा तुम बड़े ही निराले हो। कभी दिखाई पड़ते हो तो कभी गायब हो जाते हो। क्या तुम दूर देश में अपने घरवालों से मिलने जाते हो? वैसे देखा जाए तो आपका छिप जाना हमारे लिए अच्छा ही रहता है वरना हमें पूरा दिन विद्यालय में ही रहना पड़ता, काम करना पड़ता, पढ़ना पड़ता। तुम्हारे जाने के बाद रात को कुछ आराम तो मिल जाता है। अगले दिन तुम्हारी किरणों को फैलते देखकर हमें बहुत ही अच्छा लगता है और पूरे उत्साह से हम काम में लग जाते हैं।

पेड़ : घर के आँगन में आम का बड़ा पेड़ देखकर बच्चा उससे गप्पें लगाता है। पेड़-पेड़! तुम इतने बड़े कैसे हुए? तुम्हारे माँ-बाप कहाँ हैं? हम सारा दिन तुम्हारी टहनियों को पकड़ते हैं, ऊपर चढ़ते हैं पर तुम कभी नाराज़ नहीं होते। तुम्हारी यह आदत मुझे बहुत ही अच्छी लगती है। मीठे फल खाने को देते हो, छाँव देते हो, ये अच्छी-अच्छी बातें तुम्हें किसने सिखाई?

बिजली का खंभा : सड़क के किनारे पर गड़ा यह बिजली का खंभा। खंभे! तुम यहाँ अकेले क्यों खड़े रहते हो? तुम्हारे ऊपर ये इतने तार लगे हुए हैं, क्या तुम घबराते नहीं कि तुम्हें इनसे बाँधा हुआ है? एक बार भी तुम शिकायत नहीं करते कि मैं यहाँ खड़े-खड़े ऊब गया हूँ। तुम तो बड़े निडर हो, आँधी-तूफ़ान में भी डटकर खड़े रहते हो। बच्चे तुम्हारे पास आने से भी डरते हैं, कहीं करंट न मार दो।

सड़क : पूरे शहर को एक-दूसरे से जोड़ती हुई सड़क। सड़क! तुम पर चलने से गाड़ी बहुत खुश होती है क्योंकि न कीचड़ लगती है न मिट्टी, बस सरपट दौड़ती ही चली जाती है। अगर सड़क तुम न होती तो हम सब इतनी जल्दी एक स्थान से दूसरे स्थान पर कैसे पहुँचते? यह काली-काली है, पर है बड़े काम की।

पेट्रोल पंप : हमारे शहर में बहुत से पेट्रोल पंप हैं। एक पेट्रोल पंप हमारे घर से थोड़ी ही दूर पर है। मैं अक्सर उसे देखकर सोचता हूँ—पेट्रोल पंप! तुम सुबह से शाम तक गाड़ियों में पेट्रोल भरते रहते हो, क्या तुम थक नहीं जाते? अपने लंबे से पाइप से गाड़ियों में शक्ति भर देते हो। तभी तो वे चीं-पीं करती दौड़ती हैं। वाह! रे पेट्रोल पंप! तेरे काम तो निराले हैं।

भाषा की बात—

प्रश्न 1. *चाँद* संज्ञा है। *चाँदनी* रात में *चाँदनी* विशेषण है।

नीचे दिए गए विशेषणों को ध्यान से देखो और बताओ कि—

(क) कौन-सा प्रत्यय जुड़ने पर विशेषण बन रहे हैं।

(ख) इन विशेषणों के लिए एक-एक उपयुक्त संज्ञा भी लिखो—

गुलाबी पगड़ी	**मखमली घास**	**कीमती गहने**
ठंडी रात	**जंगली फूल**	**कश्मीरी भाषा**

उत्तर— उपर्युक्त शब्दों में 'ई' प्रत्यय लगने से ये विशेषण बने हैं।

गुलाबी **शहर** मखमली **गलीचा** कीमती **पत्थर**
ठंडी **आइसक्रीम** जंगली **जानवर** कश्मीरी **शाल**

प्रश्न 2. • गोल-मटोल • गोरा-चिट्टा

कविता में आए शब्दों के इन जोड़ों में अंतर यह है कि *चिट्टा* का अर्थ सफ़ेद है और गोरा से मिलता-जुलता है जबकि *मटोल* अपने-आप में कोई शब्द नहीं है। यह शब्द 'मोटा' से बना है। ऐसे चार-चार शब्द युग्म सोचकर लिखो और उनका वाक्यों में प्रयोग करो।

उत्तर— काला-स्याह, दुबला-पतला, गोल-मोल, लड़-झगड़।

(i) जितेन का रंग **काला-स्याह** है।
(ii) मोहन **दुबला-पतला** लड़का है।
(iii) वह देखने में **गोल-मटोल** लगता है।
(iv) वह अपने भाई से **लड़-झगड़** कर अलग हो गया।

प्रश्न 3. 'बिलकुल गोल' — कविता में इसके दो अर्थ हैं—
(क) गोल आकार का (ख) गायब होना!
ऐसे तीन शब्द सोचकर उनसे ऐसे वाक्य बनाओ कि शब्दों के दो-दो अर्थ निकलते हों।

(i) पतंग = कीट = बच्चे **पतंग** उड़ा रहे हैं।
बरसात में अनेक **कीट**-पतंग उड़ रहे हैं।
(ii) अंक = गोद = बच्चा माँ की **गोद** में बैठा है।
मेरे कक्षा में अच्छे **अंक** आए हैं।
(iii) योग = जमा = दो और दो **जमा** चार होता है।
मैं सुबह **योग** साधना करता हूँ।

प्रश्न 4. ताकि, जबकि, चूँकि, हालाँकि—कविता की जिन पंक्तियों में ये शब्द आए हैं, उन्हें ध्यान से पढ़ो। ये शब्द दो वाक्यों को जोड़ने का काम करते हैं। इन शब्दों का प्रयोग करते हुए दो-दो वाक्य बनाओ।

ताकि (i) मैं परिश्रम कर रहा हूँ ताकि पास हो जाऊँ।
(ii) वह जल्दी चला गया ताकि ट्रेन पकड़ सके।
जबकि (i) वह देर से आया जबकि वह जल्दी चला था।
(ii) तुम पास कैसे हो गए जबकि पढ़े भी नहीं थे।
चूँकि (i) श्याम चल नहीं सकता चूँकि वह बीमार है।
(ii) चूँकि वह मेहनती है इसलिए सफल है।
हालाँकि—(i) मोहन कक्षा में फेल हो गया हालाँकि पढ़ने में ठीक था।
(ii) शादी में खाना बच गया हालाँकि लोग बहुत ज्यादा थे।

प्रश्न 5. गप्प, गप-शप, गप्पबाजी — क्या इन शब्दों के अर्थ में अंतर है? तुम्हें क्या लगता है? लिखो।

उत्तर— गप्प, गप-शप, गप्पबाजी — इन तीनों शब्दों का अर्थ एक ही है। फालतू की बातें या समय काटने के लिए इधर-उधर की बातों को बढ़ा-चढ़ा कर करना। ऐसी बातें अर्थहीन होती हैं। हालाँकि सुनने में बड़ी अच्छी लगती है, मनोरंजन भी खूब होता है।

कुछ करने को—

● पृथ्वी के चारों ओर परिभ्रमण करते हुए चंद्रमा भी पृथ्वी के साथ-साथ सूर्य का परिभ्रमण करता है। इन्हीं दोनों परिभ्रमणों से वर्ष और मास की गणनाएँ होती हैं। सामान्यतः तीस दिनों के महीने होते हैं जिन्हें चंद्रमा की वार्षिक गति को बारह महीनों में विभाजित करके निर्धारित किया जाता है। तीस दिनों में पंद्रह-पंद्रह दिनों के दो पक्ष होते हैं। जिन पंद्रह दिनों में चंद्रमा बढ़ते-बढ़ते पूर्णिमा तक पहुँचता है, उसे शुक्लपक्ष और जिन पंद्रह दिनों में चंद्रमा घटते-घटते अमावस्या तक जाता है उसे कृष्णपक्ष कहते है। इसी तरह एक वर्ष के बारह महीनों में छह-छह माह के दो अयन होते हैं। जिन छह महीनों में मौसम का तापमान बढ़ता है, उसे उत्तरायण और जिन छह महीनों में मौसम का तापमान घटता है, उसे दक्षिणायन कहते है। संवत् के बारह महीनों के नाम इस प्रकार हैं—चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्ति, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन।

● अंग्रेजी कैलेंडर की वार्षिक गणना सूर्य के चारों ओर पृथ्वी के परिभ्रमण की अवधि के अनुसार तीन सौ पैंसठ दिनों की होती है। इसके महीनों की गणना पृथ्वी के चारों ओर चंद्रमा के परिभ्रमण पर आधारित नहीं है। इसमें वर्ष के तीन सौ पैंसठ दिनों को ही बारह महीनों में विभाजित किया गया है। इस कैलेंडर के सभी महीने तीस-तीस दिन के होते। अप्रैल, नवंबर, जून, सितंबर—इनके हैं दिन तीस। फरवरी है अट्ठाइस दिन की, बाकी सब इकत्तीस।

● नीचे दो प्रकार के कैलेंडर दिए गए हैं। इन्हें देखो और प्रश्नों के उत्तर दो।

मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष-मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष संवत 2063

6 नवंबर से 4 दिसंबर सन् 2006

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	कृ.प्रतिपदा	कृ. द्वितीया	कृ.तृतीया	कृ.चतुर्थी	कृ.पंचमी	कृ.षष्ठी
	1	2	3	4	5	6
कृ. सप्तमी	कृ.अष्टमी	कृ.नवमी	कृ.दशमी	कृ.एकादशी	कृ.द्वादशी	कृ.त्रयोदशी
7	8	9	10	11	12	13
कृ.चतुर्दशी	अमावस्या	शु.प्रतिपदा	शु.द्वितीया	शु.तृतीया	शु.चतुर्थी	शु.पंचमी
14	15	1	2	3	4	5
शु.षष्ठी	शु.सप्तमी	शु.अष्टमी	शु.नवमी	शु.दशमी	शु.एकादशी	शु.द्वादशी
6	7	8	9	10	11	12
शु.त्रयोदशी	शु.चतुर्दशी	पुर्णिमा				
13	14	15				

नवंबर-दिसंबर ई. सन् 2006

6 नवंबर से 4 दिसंबर सन् 2006

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	1	2
3	4					

(क) ऊपर दिए गए कैलेंडरों में से किस कैलेंडर में चंद्रमा के अनुसार महीने के दिन दिए गए हैं।
(ख) दिए गए दोनों कैलेंडरों के अतर स्पष्ट करो।

(ग) कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष का क्या अर्थ होता है?
उत्तर— (क) ऊपर दिए गए दोनों कैलेंडरों में से संवत 2063 के कैलेंडर में चंद्रमा के अनुसार महीने के दिन दिए गए हैं।
(ख) संवत 2063 में चंद्रमा के अनुसार कृष्णपक्ष तथा शुक्लपक्ष दिखाए गए हैं। महीने के दिनों को पंद्रह-पंद्रह में बाँटा गया है। सन-2006 में सप्ताह के दिवस दिखाए गए है और यह बताया गया है कि किस दिन क्या तिथि होगी। नवंबर के तीस दिन दिखाए गए हैं।
(ग) शुक्लपक्ष—जिन पंद्रह दिनों में चंद्रमा बढ़ते-बढ़ते पूर्णिमा तक पहुँचता है, उसे शुक्लपक्ष कहते हैं।
कृष्णपक्ष—जिन पंद्रह दिनों में चंद्रमा घटते-घटते अमावस्या तक पहुँचता है, उसे कृष्णपक्ष कहते है।

परीक्षोपयोगी अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर—

प्रश्न 1. चाँद ने क्या पहना हुआ है?
उत्तर— कविता के अनुसार चाँद ने तारों से जड़े हुए आकाश की पोशाक को पहना हुआ है।
प्रश्न 2. चाँद को कौन सा मर्ज़ है? जो ठीक नहीं होता।
उत्तर— चाँद को घटने-बढ़ने का मर्ज़ है जो ठीक नहीं होता।
प्रश्न 3. 'हमको बुद्धू ही निरा समझा है!' कहकर लड़की क्या कहना चाहती है?
उत्तर— कविता की इस पंक्ति में लड़की चाँद को कहना चाहती है कि आपने हमें क्या बिलकुल मूर्ख समझ लिया है। क्या हम सोच-समझ नहीं सकते, क्या आपको देखकर हम अंदाजा नहीं लगा सकते कि आपको घटने-बढ़ने की बीमारी है। जब आप घटते हैं तो घटते ही चले जाते हैं और बढ़ते हैं तो बढ़ते ही चले जाते हैं।
प्रश्न 4. आशय बताओ— 'यह मरज़ आपका अच्छा ही नहीं होने में आता है।'
उत्तर— इस पंक्ति से कवि का आशय है कि चाँद को घटने-बढ़ने की बीमारी है। जब घटता है तो घटता ही चला जाता है और जब बढ़ता है तो बढ़ता ही चला जाता है जब तक कि पूरा गोल न हो जाए। यह बीमारी ऐसी है जो कभी ठीक नहीं होती।

निबंधात्मक प्रश्नोत्तर—

प्रश्न 1. 'दम नहीं लेते है जब तक बिलकुल ही गोल न हो जाएँ' का आशय लिखिए।
उत्तर— चाँद जब घटने लगता है तो धीरे-धीरे घटता ही चला जाता है। घटने का उसका यह काम तब तक चलता रहता है जब तक वह बिलकुल ही समाप्त न हो जायें। वह बीच में कभी भी आराम नहीं करता, कभी भी थोड़ी देर के लिए नहीं रुकता, वह घटने का कार्य करते-करते थकता ही नहीं। उसके घटने का क्रम तब तक चलता रहता है जब तक कि वह बिलकुल ही दिखना बंद नहीं हो जाता।
प्रश्न 2. 'बिलकुल गोल' के दो अर्थ है कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
उत्तर— बिलकुल गोल का एक अर्थ है जो पूरी तरह से गोल हो और दूसरा अर्थ है, समाप्त हो जाना, बिलकुल भी दिखाई न देना। इसका प्रयोग चाँद के प्रसंग में किया गया है। चाँद पूर्णमासी की रात को पूरी तरह से गोल होता है, वहीं चाँद घटते-घटते अमावस्या की रात को पूरी तरह गोल हो जाता है यानि दिखाई नहीं देता।

● बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर—

1. चंद्रमा कैसा नजर आता है—
(क) गोल (ग) तिरछा
(ख) आधा (घ) पूरा
2. गोरा-चिट्टा, गोल-मटोल कौन है—
(क) सूरज (ग) तारे
(ख) चंद्रमा (घ) आकाश
3. 'सिम्त' शब्द का क्या अर्थ है—
(क) आकाश (ग) सफेद
(ख) चमकीला (घ) दिशाएँ
4. हमको...ही निरा समझा है। (पंक्ति को पूर्ण करें।)—
(क) चतुर (ग) बुद्धू
(ख) कुशल (घ) निपुण
5. इस पद्यांश के अनुसार बीमारी किसे है—
(क) कवि को (ग) चाँद को
(ख) छात्रों को (घ) आकाश को
6. घटते-बढ़ते रहना किसका स्वभाव है—
(क) चाँद का (ग) तारों का
(ख) सूरज का (घ) दिशाओं का
7. किसका मरज़ (बीमारी) अच्छा नहीं होता—
(क) आकाश का (ग) चाँद का
(ख) रोगी का (घ) सूर्य का
8. चंद्रमा का आकार कब आधा रह जाता है—
(क) पूर्णिमा के दिन (ग) अष्टमी के दिन
(ख) अमावस्या के दिन (घ) पंचमी के दिन
9. किस दिन चंद्रमा गोल-मटोल दिखता है—
(क) पूर्णिमा के दिन (ग) अमावस्या के दिन
(ख) किसी दिन भी (घ) अष्टमी के दिन

उत्तर— 1. (ग), 2. (ख), 3. (घ), 4. (ग), 5. (ग), 6. (क), 7. (ग), 8. (ग), 9. (क)।